सामान्य अध्ययन

प्राचीन भारत का इतिहास

CSE पाठ्यक्रम के अनुरूप

Powered by

Sanskriti IAS

संस्कृति IAS

प्राचीन भारत का इतिहास

विषय-सूची

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
1	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	3-10
2	पाषाणकालीन संस्कृति या जीवन शैली	11-20
3	सिंधु घाटी सभ्यता	21-39
4	वैदिक काल	40-56
5	महाजनपद काल – छठी सदी ई.पू.	57-63
6	प्राचीन भारत में धार्मिक आंदोलन	64-83
7	मौर्य काल	84-101
8	मौर्योत्तर काल	102-129
9	गुप्त साम्राज्य	130-148
10	गुप्तोत्तर काल	149-153
11	संगम काल	154-164
12	दक्षिण भारत का इतिहास	165-176

इकाई 1

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत
(Sources of Ancient Indian History)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- भूमिका
- प्रमुख ऐतिहासिक स्रोतों का वर्गीकरण
  - ➤ पुरातात्विक स्रोत
    - उत्खनन सामग्रियाँ
    - अभिलेख
    - स्मारक और भवन
    - सिक्के
    - कलाकृतियाँ
    - पुरातात्विक स्रोतों का महत्त्व
  - ➤ साहित्यिक स्रोत
    - ब्राह्मण साहित्य
    - ब्राह्मणेत्तर साहित्य
    - प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ
    - साहित्यिक स्रोतों की सीमाएँ
  - ➤ विदेशी वृत्तांत
    - ईरान, यूनान एवं रोम के लेखक
    - चीनी यात्रियों के वृत्तांत
    - अरब यात्रियों के वृत्तांत

भूमिका (Background)

अतीत में घटित घटनाओं के क्रमबद्ध अध्ययन को इतिहास कहते हैं। इससे मानव इतिहास के उन पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है जिनसे होकर मनुष्य वर्तमान दौर तक पहुँचा है। कुछ लोगों का मानना है कि इतिहास युद्ध और शासकों की कहानियों तक सीमित है, किंतु यह सत्य नहीं है क्योंकि इसका विषय क्षेत्र काफी विस्तृत है। इतिहास की विभिन्न घटनाओं को समझने के लिए अलग-अलग दृष्टिकोणों का अनुसरण किया जाता है। भारत में हेरोडोटस या लिवी जैसे इतिहासकार नहीं हुए। ऐसे में, कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने मत व्यक्त किया कि भारतीयों में इतिहास की समझ और ऐतिहासिक ज्ञान का अभाव था। परंतु सच तो यह है कि प्राचीन भारतीय इतिहास की धारणा आधुनिक इतिहासकारों की इतिहास लेखन की धारणा से पूर्णत: अलग थी।

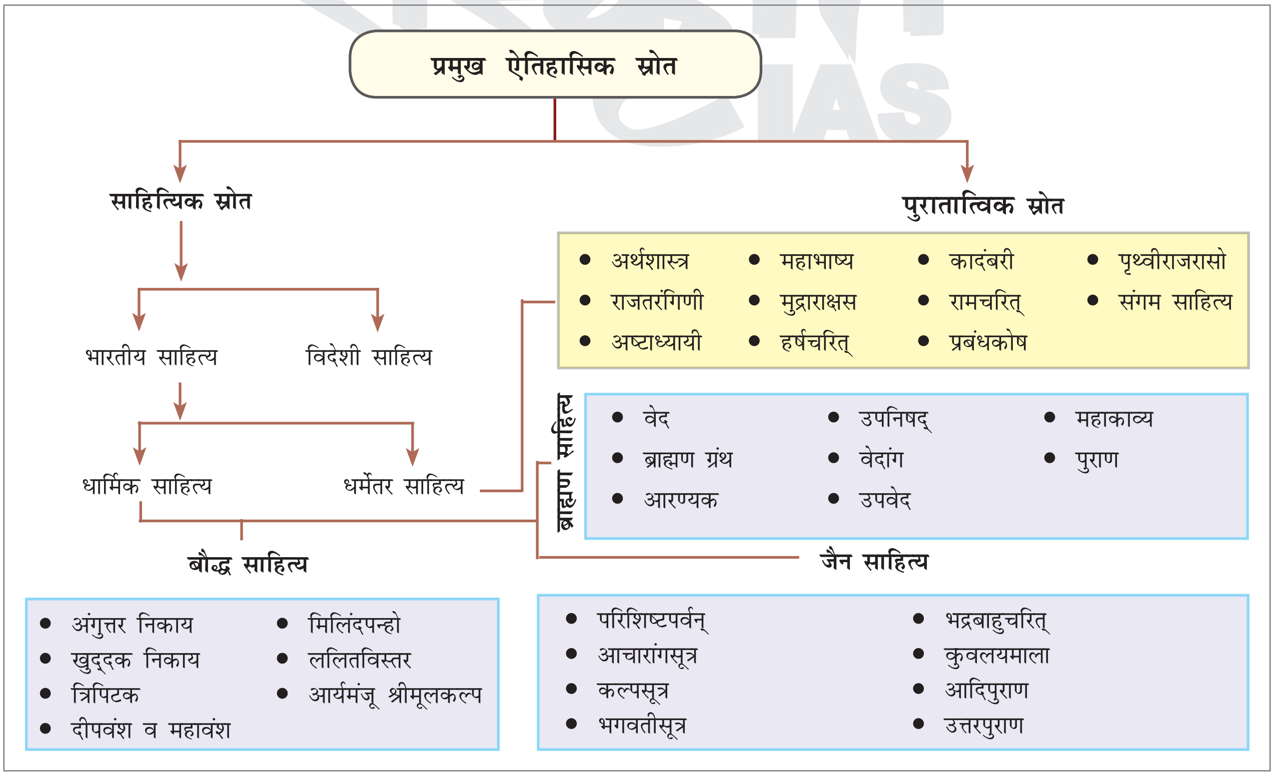

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 2

पाषाणकालीन संस्कृति या जीवन शैली
(Stone Age Culture or Lifestyle)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'पाषाणकालीन संस्कृति या जीवन शैली तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- प्राचीन भारतीय इतिहास का विकास
  - प्रागैतिहासिक काल
  - आद्य ऐतिहासिक काल
  - ऐतिहासिक काल
- प्रागैतिहासिक काल : पाषाण काल
- पुरापाषाण काल : जीवन शैली (आरंभ से 10000 ई.पू.)
  - निम्न पुरापाषाण काल
  - मध्य पुरापाषाण काल
  - उच्च पुरापाषाण काल
  - पुरापाषाणकालीन उपकरण
- मध्यपाषाण काल : जीवन शैली
  - मध्यपाषाण काल : परिवर्तन एवं विकास
  - प्रमुख स्थल
  - मध्यपाषाणकालीन उपकरण
- नवपाषाण काल : जीवन शैली
  - नवपाषाण काल : परिवर्तन एवं विकास
  - नवपाषाणिक संस्कृति का भौगोलिक विस्तार
  - नवपाषाणकालीन उपकरण
- ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ
  - ताम्रपाषाणकालीन जीवन शैली
  - विभिन्न ताम्रपाषाणिक संस्कृतियाँ

परिचय (Introduction)

- हिस्ट्री (History) शब्द की उत्पत्ति यूनानी शब्द 'हिस्टोरिया' (Historia) से मानी जाती है, अर्थ होता है– जानना अथवा ज्ञात होना। यूनानी भाषा में इतिहासकार को 'हिस्टोर' कहा जाता है। इतिहास तीन शब्दों- 'इति-ह-आस' से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है– 'निश्चित रूप से ऐसा हुआ' होगा।
- पृथ्वी पर मानव के अस्तित्व एवं विकास-क्रम को जानने के लिए इतिहास को समझना आवश्यक है। दरअसल, इतिहास वर्तमान के प्रकाश में अतीत का किया गया अध्ययन है जो कि समस्त मानव जाति द्वारा की गई उन्नति का विवरण प्रस्तुत करता है।

इतिहास के लिए 'हिस्ट्री' (History) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग हेरोडोटस ने किया था जो यूनान का निवासी था। हेरोडोटस को 'इतिहास का जनक' माना जाता है। इनके द्वारा लिखे गए इतिहास को 'कथात्मक इतिहास' कहा जाता है।

- निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर इतिहास के महत्त्व एवं इसकी जानकारी से होने वाले लाभों को समझा जा सकता है-
  - मानव जाति का अभ्युदय एवं विकास
  - प्राचीन संस्कृतियों की जानकारी
  - विभिन्न भाषाओं एवं लिपियों की जानकारी
  - विभिन्न धर्मों की जानकारी
  - लोककला एवं वास्तुकला की जानकारी
  - साहित्य का विकास
  - विज्ञान का विकास
  - लोकतांत्रिक संस्थाओं के उद्‌भव एवं विकास की जानकारी
  - विविधता में एकता
  - उज्ज्वल भविष्य की सीख

प्राचीन भारतीय इतिहास का विकास (Development of Ancient Indian History)

- प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन कई मामलों में महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे इस बात का पता चलता है कि मानव समुदायों ने हमारे देश में प्राचीन संस्कृतियों का विकास कब, कहाँ और कैसे किया।
- इतिहास की जानकारी प्रदान करने हेतु उपलब्ध स्रोतों की विशेषता के आधार पर इतिहासकारों ने इतिहास को निम्नलिखित तीन कालखंडों में विभाजित किया है-

प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Period)

यह प्राचीन-इतिहास का एक ऐसा कालखंड है जिसकी जानकारी के लिए पुरातात्विक साक्ष्य (जैसे– पुरातात्विक स्थल, औज़ार/उपकरण, शैलाश्रय आदि) तो उपलब्ध हैं, लेकिन लिखित साक्ष्य अनुपस्थित हैं।

Copyright @ Sanskriti IAS

पुरापाषाणकालीन उपकरण (Paleolithic Tools)

चीरने के औज़ार (Cleaver)	• इनमें दोहरी धार होती थी। • इनका उपयोग पेड़ काटने और चीरने के लिए होता था।	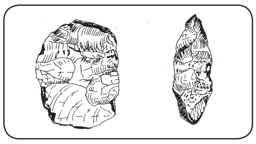
काटने के औज़ार (Chopper)	• यह एक बड़ा औज़ार होता था जिसमें एक-तरफा धार होती थी। • इसका उपयोग काटने के लिए किया जाता था।	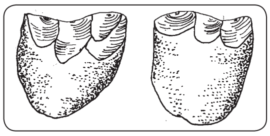
काटने के औज़ार (Chopping Tool)	• यह चौपर के समान एक बड़ा औज़ार था परंतु इसमें दोहरी धार होती थी। • इसमें कई पट्टे होते थे।	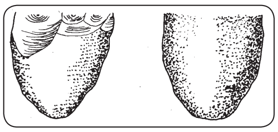
खुरचनी (Scraper)	• इसका किनारा धारदार होता था। • इसका उपयोग पेड़ की छाल या जानवरों की खाल उतारने में किया जाता होगा।	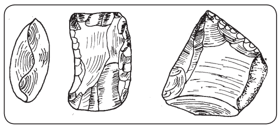
तक्षणी (Burin)	• यह ब्लेड के समान हुआ करती थी। • संभवतः इसका उपयोग मुलायम पत्थरों, हड्डियों, क्रोडों या गुफाओं की दीवारों पर नक्काशी के लिए किया जाता था।	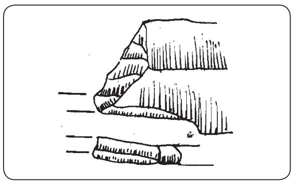

मध्यपाषाण काल : जीवन शैली (Mesolithic Age : Lifestyle) 100000–8000 ई.पू.

मध्यपाषाण काल
• हिम युग की समाप्ति (जलवायु परिवर्तन) • घासयुक्त मैदान एवं जंगलों का प्रादुर्भाव • विशालकाय जानवरों (मैमथ, रेनडियर) के स्थान पर छोटे जानवरों (खरगोश, बकरी, हिरण इत्यादि) की उत्पत्ति • शिकार हेतु लघु पाषाण उपकरणों (माइक्रोलिथ) का निर्माण, जैसे– अज्यामितिक लघु पाषाणोपकरण, ज्यामितिक लघु पाषाणोपकरण आदि • **प्रमुख हथियार–** धनुष-बाण का विकास, एक-तरफा धार वाले फलक उपकरण वेधनी, अर्द्धचंद्राकार, समलंब इत्यादि • **क्षेत्र–** बीरभानपुर, लंघनाज, टेरीसमूह, आदमगढ़, बागोर, मोरहना पहाड़, सरायनाहर राय, महादहा इत्यादि • जनसंख्या में वृद्धि • स्थायी निवास, पशुपालन एवं कृषि तथा मिट्टी के बर्तन बनाने का आरंभिक चरण

- इतिहासकारों का मानना है कि उच्च पुरापाषाण काल का अंत 8000 ई.पू. के आसपास हिम युग के अंत के साथ हुआ और इसी दौरान मध्यपाषाण काल का आगमन हुआ।

यह काल पुरापाषाण काल एवं नवपाषाण काल के बीच का संक्रमण काल है। इस काल तक आते-आते मानव की जीवन शैली में पुरापाषाण काल की तुलना में अनेक परिवर्तन और उद्‌विकास के तत्त्व दिखाई देते हैं जिनका वर्णन निम्नलिखित है–

मध्यपाषाण काल : परिवर्तन एवं विकास (Mesolithic Age : Changes and Development)

- मध्यपाषाण काल के लोग सामान्यतः शिकार करके, मछली पकड़कर व खाद्य वस्तुओं का संग्रह करके अपना जीवनयापन करते थे, किंतु आगे चलकर वे पशुपालन भी करने लगे। इनमें शुरू के तीन पेशे तो पुरापाषाण काल से ही चले आ रहे थे, परंतु अंतिम पेशा (पशुपालन) मध्यपाषाण काल के अंत में अथवा नवपाषाण काल के आरंभ में उदित हुआ।
- इस काल में मानव एवं पशुओं के मध्य सहजीवन की प्रवृत्ति का विकास हुआ। मानव ने सर्वप्रथम कुत्ते को पालतू बनाया। कुत्ते का उपयोग मनुष्य ने शिकार में सहायता प्राप्त करने के लिए किया।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 3

सिंधु घाटी सभ्यता
(Indus Valley Civilization)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'सिंधु घाटी सभ्यता तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- सिंधु घाटी सभ्यता की उत्पत्ति
- सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार
- सिंधु घाटी सभ्यता के निर्माता
- नगर नियोजन
- महत्त्वपूर्ण नगर एवं संबंधित तथ्य
- राजनीतिक जीवन
- सामाजिक जीवन
- आर्थिक जीवन
- धार्मिक जीवन
- कला एवं स्थापत्य
- सिंधु घाटी सभ्यता का पतन

परिचय (Introduction)

- बीसवीं सदी के दूसरे दशक तक माना जाता था कि वैदिक (आर्य) सभ्यता ही भारत की प्राचीनतम सभ्यता है, किंतु 1921 ई. में दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा में में उत्खनन के पश्चात् एक ऐसी सभ्यता के बारे में पता चला जो वैदिक सभ्यता से ज़्यादा विकसित, समृद्ध और प्राचीन थी।
- गौरतलब है कि 1826 ई. में सर्वप्रथम चार्ल्स मेसन ने इसका उल्लेख किया। इसीक्रम में 1875 ई. में सर्वप्रथम अलेक्जेंडर कनिंघम का ध्यान हड़प्पा के पुरावशेषों की तरफ आकृष्ट हुआ।
- प्रारंभिक उत्खननों से सिंधु सभ्यता के पुरास्थल केवल हड़प्पा व उसके आसपास के क्षेत्र में ही मिले थे जिससे इसका नामकरण हड़प्पा सभ्यता किया गया था। कालांतर में जब हड़प्पा से इतर भौगोलिक क्षेत्रों में भी अन्य पुरास्थलों की खोज हुई तो इसके बहुतायत स्थल सिंधु नदी घाटी के क्षेत्रों में भी मिले जिसके आधार पर इस सभ्यता को 'सिंधु घाटी' सभ्यता कहा गया।
- उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि हड़प्पा/सिंधु सभ्यता का उदय ताम्रपाषाण काल के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ। इस सभ्यता के स्थल वर्तमान में भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों तक विस्तृत हैं। सिंधु घाटी सभ्यता सर्वाधिक विकसित, विस्तृत तथा समृद्ध अवस्था में थी।
- सिंधु सभ्यता के काल निर्धारण हेतु कई साक्ष्यों, यथा– मुहरें (वे वस्तुएँ जिनका उपयोग समकालीन सभ्यताओं के साथ व्यापार में किया जाता था), समकालीन सभ्यताओं के अभिलेखों आदि की सहायता ली गई है। इनके अतिरिक्त, काल निर्धारण की वैज्ञानिक विधियों, यथा– रेडियो कार्बन-14 तिथि निर्धारण विधि और साथ ही वृक्ष-विज्ञान (dendrology) तथा पुरावनस्पति विज्ञान की अन्वेषण विधियों का भी उपयोग किया गया। इस प्रकार, हड़प्पा सभ्यता का काल 2500 ई.पू. से 1750 ई.पू. माना गया है। 2200-2000 ई. पू. के मध्य यह सभ्यता अपनी परिपक्व अवस्था में थी। हालाँकि, नवीन शोध एवं अध्ययन के अनुसार, यह सभ्यता लगभग 8000 साल पुरानी है।
- हड़प्पा सभ्यता को कांस्ययुगीन सभ्यता माना जाता है क्योंकि इसमें काँसे के उपकरणों का व्यापक स्तर पर प्रयोग हुआ था।

सिंधु घाटी सभ्यता की उत्पत्ति (Origin of Indus Valley Civilization)

- सिंधु सभ्यता की उत्पत्ति तथा इसके संस्थापकों से संबंधित प्रश्नों पर इतिहासकार एवं विद्वान एकमत नहीं हैं। वास्तव में, इस सभ्यता के उद्भव तथा इसके संस्थापकों के संदर्भ में ठोस निष्कर्ष प्राप्त करना मुख्यत: दो व्यावहारिक समस्याओं के कारण कठिन रहा है- पहली, क्षैतिज उत्खनन का अभाव तथा दूसरी, जल स्तर के नीचे उत्खनन का कार्य पूरा ना हो पाना।
- सिंधु सभ्यता की लिपि चित्रात्मक होने के कारण इसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है जिससे इसकी उत्पत्ति के संदर्भ में वास्तविक एवं सर्वमान्य मत प्राप्त नहीं हो पाया है।
- इस सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में विद्वानों के विभिन्न मत हैं। कुछ विद्वानों ने इसकी उत्पत्ति को विदेशियों की देन बताया है, वहीं कुछ इसे देशी सभ्यता मानते हैं।

विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत (Theory of Foreign Origin)

- विदेशी उत्पत्ति के सिद्धांत के तहत कई इतिहासकार मानते हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता की उत्पत्ति मेसोपोटामिया की सभ्यता के विस्तार-स्वरूप हुई थी। कुछ विद्वानों का मानना है कि विसरणवादी सिद्धांत के अनुसार, मेसोपोटामिया की सुमेरियन सभ्यता के लोग उस जगह से भारत की ओर क्रमश: विस्थापित होते गए।
- इस संबंध में गार्डन चाइल्ड का मानना है कि मेसोपोटामिया के लोगों ने नवीन पृष्ठभूमि में अपनी संस्कृति का आरोपण किया जिससे द्रुतगति से इस सभ्यता का विकास हुआ।

Copyright @ Sanskriti IAS

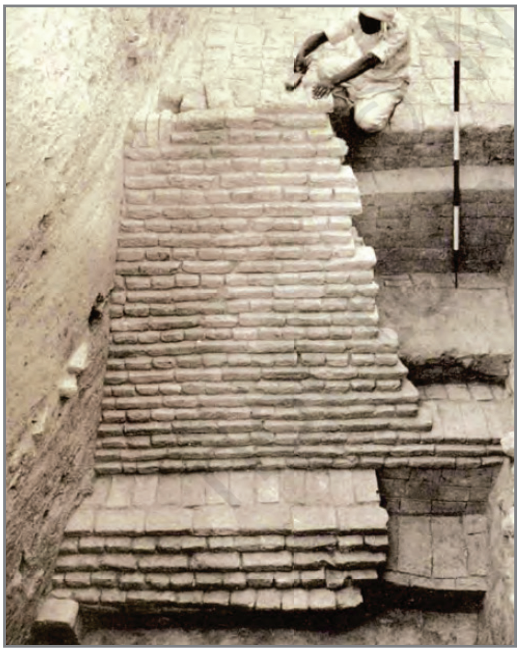

बृहद् स्नानागार (The Great Bath)

बृहद् स्नानागार

- केंद्रीय प्रांगण के बीच जलाशय
- नीचे तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ
- पकी ईंटों से निर्मित फर्श
- स्नानागार के समीप 'कुआँ'
- पानी गर्म करने की व्यवस्था
- जलाशय के तीन ओर बरामदे
- धार्मिक समारोह के अवसरों पर उपयोग

- बृहद् स्नानागार सिंधु सभ्यता के स्थापत्य की सर्वोत्कृष्ट संरचनाओं में से एक है। इसे मोहनजोदड़ो नगर के बीचों-बीच स्थित सर्वाधिक महत्त्व का स्मारक माना गया है। इस विशाल स्नानागार के केंद्रीय प्रांगण के बीच जलाशय या स्नानकुंड स्थित है। इसकी उत्तर से दक्षिण की ओर लंबाई 39 फुट (11.89 मीटर) तथा पूर्व से पश्चिम की ओर चौड़ाई 23 फुट (7.01 मीटर) और गहराई 8 फुट (2.44 मीटर) है; अर्थात् इसका आकार लगभग $12 \times 7 \times 2.5$ घन मीटर है।
- स्नानकुंड में नीचे उतरने के लिए उत्तर और दक्षिण की ओर 'सीढ़ियाँ' बनी हुई हैं तथा जलाशय का फर्श पकी ईंटों से निर्मित है।
- विशाल स्नानागार के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर एक नाली थी जिससे गंदे जल का निकास होता था। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि समय-समय पर स्नानागार की सफाई की जाती होगी। इसके निकट ही एक कुआँ है जिससे स्नानकुंड में पानी भरा जाता होगा। कुछ इतिहासकारों का मत है कि स्नानागार के समीप पानी गर्म करने की भी व्यवस्था थी।
- जलाशय के तीन ओर बरामदे और उनके पीछे कई कमरे तथा गैलरियाँ बनी थीं। प्रत्येक कमरे में ईंटों से निर्मित सीढ़ियाँ मिली हैं जिससे अनुमान लगाया जाता है कि इनके ऊपर दूसरी मंज़िल भी रही होगी।
- इतिहासकार मैके का मानना है कि इसमें पुजारी रहते होंगे जो ऊपरी कक्षा में पूजा-पाठ करते थे तथा नीचे के कमरों में स्नान के लिए उतरते थे।
- वृहद् स्नानागार के उत्तर दिशा में छोटे स्नानागार भी बने हैं। संभवतः वृहद् स्नानागार का उपयोग सामान्य जनता द्वारा धार्मिक समारोहों के अवसर पर किया जाता था। इससे ज्ञात होता है कि सिंधु सभ्यता में धार्मिक कार्यों एवं शारीरिक संस्कार के लिए स्वच्छता के उच्च मापदंडों का अनुसरण किया जाता था।

पुरोहित आवास (Priest Residence)

वृहद् स्नानागार के उत्तर-पूर्व की ओर एक विशाल भवन के अवशेष मिले हैं जो आकार में 230 फुट लंबा और 78 फुट चौड़ा है। इसमें 10 मीटर का वर्गाकार प्रांगण, तीन बरामदे एवं कई कमरे बने हुए हैं। अर्नेस्ट मैके का मत है कि संभवतः यह बड़े पुरोहित का निवास अथवा पुरोहितों का विद्यालय रहा होगा।

अन्नागार (Granary)

- वास्तुकला की दृष्टि से मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा के बने अन्नागार (धान्यागार) भी उल्लेखनीय हैं। पहले इसे स्नानागार का ही एक भाग माना जाता था, किंतु वर्ष 1950 में हुए उत्खननों के बाद स्पष्ट हुआ कि ये अवशेष एक 'विशाल अन्नागार' के हैं। ध्यातव्य है कि इन अन्नागारों में अधिशेष (Surplus) अन्न का भंडारण किया जाता था।

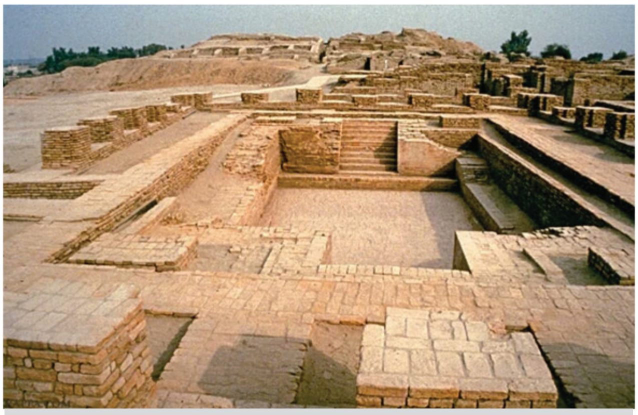

मोहनजोदड़ो में स्थित वृहद् स्नानागार

- दरअसल, स्नानागार के समीप पश्चिम में विद्यमान मोहनजोदड़ो का अन्नागार पकी ईंटों के विशाल चबूतरे पर निर्मित है जो कि पूर्व से पश्चिम तक 45.72 मीटर लंबा तथा उत्तर से दक्षिण तक 22.86 मीटर चौड़ा है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 4	वैदिक काल (Vedic Period)

वैदिक काल
(Vedic Period)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'वैदिक काल और उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- भूमिका
- आर्यों की उत्पत्ति
- ऋग्वैदिक काल
  - जानकारी के स्रोत
  - भौगोलिक विस्तार
  - राजनीतिक स्थिति
  - सामाजिक स्थिति
  - आर्थिक स्थिति
  - धार्मिक स्थिति
- उत्तर वैदिक काल
  - जानकारी के स्रोत
  - भौगोलिक विस्तार
  - राजनीतिक स्थिति
  - सामाजिक स्थिति
  - आर्थिक स्थिति
  - धार्मिक स्थिति
- वैदिक साहित्य
- वैदिकोत्तर साहित्य
- वैदिक संस्कृति व सिंधु घाटी सभ्यता में अंतर
- वैदिककालीन प्रमुख शब्दावलियाँ

भूमिका (Introduction)

- सिंधु सभ्यता के पतन के बाद भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न संस्कृतियों का क्रमिक विकास हुआ। इतिहासकारों का मानना है कि इसी दौरान भारत में आर्यों का आगमन हुआ और इन्होंने सैंधव प्रदेश में आर्य संस्कृति की नींव रखी जिसकी जानकारी हमें वेदों से प्राप्त होती है। इसलिए, विद्वानों ने इसे 'वैदिक संस्कृति' का नाम दिया।
- आर्य सभ्यता का इतिहास जानने के लिए पुरातात्विक स्रोतों का तो अभाव है, लेकिन साहित्यिक स्रोत प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। साहित्यिक स्रोतों में वैदिक साहित्य प्रमुख हैं। वैदिक संस्कृति एक ग्रामीण संस्कृति थी। ऐसा माना जाता है कि इसी कालखंड में वेदों की रचना हुई थी।
- वैदिक शब्द की उत्पत्ति 'वेद' शब्द एवं 'विद्' धातु से हुई है। वेद का अर्थ 'ज्ञान' है। यह मूल रूप से दैवीय प्रेरणा पर आधारित अनुभवों का संकलन है जिसकी जानकारी हमें वैदिक ग्रंथों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) से मिलती है। इनमें से सबसे प्राचीन वेद 'ऋग्वेद' है।
- 'आर्य' संस्कृत भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ होता है– श्रेष्ठ, उत्तम, कुलीन तथा उत्कृष्ट। यह अनुमान लगाना कठिन है कि आर्य एक ही नस्ल के थे या नहीं और उनकी आरंभिक संस्कृति एक-जैसी थी या नहीं।
- इस काल के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन तथा अन्य तत्त्वों में विभिन्न परिवर्तन परिलक्षित होने लगे थे। ध्यातव्य है कि पूर्व वैदिक काल में मानव जीवन के जो विभिन्न तत्त्व विकसित हुए थे, उत्तर वैदिक काल में उनमें परिवर्तन दिखाई पड़ता है।

आर्यों की उत्पत्ति (Origin of the Aryans)

- ईरान की पवित्र पुस्तक ज़ेंद अवेस्ता और बोगज़कोई अभिलेख से स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि आर्य ईरान के रास्ते से भारत आए थे। सर्वप्रथम मैक्समूलर ने 1853 ई. में 'आर्य' शब्द का प्रयोग किया। आर्यों के मूल निवास के संदर्भ में विद्वानों के बीच गहरा मतभेद है। कुछ विद्वानों का मानना है कि आर्य मूलतः भारत के निवासी थे और वे भारत से विश्व के अन्य हिस्सों में गए, जबकि अन्य विद्वान आर्यों की उत्पत्ति विश्व के विभिन्न हिस्सों से हुई मानते हैं। इस संदर्भ में विद्वानों के मत निम्नलिखित हैं–

विद्वान	आर्यों का उत्पत्ति स्थल	विद्वान	आर्यों का उत्पत्ति स्थल
मैक्समूलर	मध्य एशिया (बैक्ट्रिया)	नेहरिंग एवं प्रो. गार्डन चाइल्ड	दक्षिणी रूस
बाल गंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव	गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि देश
डॉ. अविनाश चंद्र दास	सप्तसैंधव प्रदेश	पी. गाइल्स	हंगरी अथवा डेन्यूब नदी घाटी
दयानंद सरस्वती	तिब्बत	प्रो. पेंका	जर्मनी के मैदानी भाग

- वैदिक संस्कृति को इसकी विशेषताओं की दृष्टि से इतिहासकारों ने दो भागों में विभाजित किया है–
  - ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.)
  - उत्तर वैदिक काल (1000–600 ई.पू.)

Copyright @ Sanskriti IAS

संस्कृति IAS

इकाई 5 — महाजनपद काल – छठी सदी ई.पू. (Mahajanapada Period – 6th Century BC)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'महाजनपद काल – छठी सदी ई.पू. तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- प्रमुख स्रोत
- महाजनपदों का उदय
- बुद्ध के समकालीन गणतंत्र
- मगध साम्राज्य का उदय
  - उदय के कारण
  - मगध साम्राज्य के प्रमुख वंश
- विदेशी आक्रमण
  - ईरानी (हखामनी) आक्रमण
  - यूनानी आक्रमण
- द्वितीय नगरीकरण
  - नगरीकरण के तत्त्व
  - जानकारी के स्रोत
  - उदय के कारण
  - प्रथम एवं द्वितीय नगरीकरण में अंतर

प्रमुख स्रोत (Major Source)

- छठी सदी ई.पू. का काल भारतीय इतिहास में महाजनपद काल के नाम से जाना जाता है। इस दौरान ऋग्वैदिककालीन 'जन' का विकास 'जनपद' से होते हुए महाजनपद का स्वरूप ग्रहण कर चुका था। महाजनपद के संदर्भ में हमें विभिन्न साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों से जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।
- देशी साहित्य के अंतर्गत बौद्ध, जैन एवं ब्राह्मण ग्रंथ, जैसे– अंगुत्तर निकाय, महावस्तु कल्पसूत्र, भगवतीसूत्र, वेदांग, उपनिषद्, उपवेद इत्यादि महत्त्वपूर्ण हैं।
- विदेशी साहित्य के अंतर्गत हिकेटियस, हेरोडोटस, टेसियस, निर्याकस, जस्टिन, प्लूटार्क इत्यादि के विवरण महाजनपदकालीन इतिहास के संदर्भ में जानकारी प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त पुरातात्विक स्रोतों, यथा– उत्तर प्रदेश के अतरंजीखेड़ा तथा विभिन्न स्थानों से प्राप्त उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड (NBPW), आहत सिक्के एवं लौह उपकरण से तत्कालीन जन-जीवन के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

महाजनपदों का उदय (Rise of Mahajanpadas)

आर्य संस्कृति के एकीकरण ने जनपदों के विस्तार के लिए अवसर प्रदान किया। कालांतर में कई जनपदों के मिलने से महाजनपदों का विकास हुआ। छठी सदी ई.पू. तक आते-आते राज्यों का विस्तार होने लगा। लोहे के बढ़ते उपयोग के कारण कला-कौशल के क्षेत्र में भी प्रगति हुई और शिल्पों का विविधीकरण होने लगा। इससे धन संग्रहण एवं व्यापार-वाणिज्य में वृद्धि हुई तथा राज्यों का विकास संभव हो पाया। ऐसा माना जाता है कि छठी सदी ई.पू. में पूर्वी भारत के क्षेत्रों में लोहे से निर्मित औज़ारों के प्रयोग से उत्पादन-अधिशेष की स्थिति उत्पन्न हुई। इस कारण व्यापार एवं वाणिज्य को बढ़ावा मिला। लौह उपकरणों के निर्माण से क्षत्रिय वर्ग की शक्ति में वृद्धि हुई। इन परिवर्तनों के कारण पहले से प्रचलित कबीलाई सामाजिक संरचना में भी बदलाव आया। इसके अलावा, आर्थिक समृद्धि बढ़ने के कारण नगरों का विकास होने लगा। फलस्वरूप, उत्तर वैदिक काल में विद्यमान जनपद, महाजनपदों में रूपांतरित हो गए। महाजनपद काल को 'बुद्ध काल' के नाम से भी जाना जाता है।

महाजनपदों की कुल संख्या 16 थी, इनका विवरण बौद्ध ग्रंथों, 'अंगुत्तर निकाय', 'महावस्तु' तथा जैन ग्रंथ 'भगवतीसूत्र' में मिलता है। इन महाजनपदों में मगध, कोसल, वत्स और अवंती सबसे शक्तिशाली महाजनपद हुआ करते थे। सोलह महाजनपदों में गोदावरी नदी के तट पर स्थित 'अश्मक' ही एकमात्र ऐसा महाजनपद था जो दक्षिण भारत में स्थित था। इन 16 महाजनपदों में वज्जि एवं मल्ल में गणतंत्रात्मक व्यवस्था थी, जबकि शेष महाजनपदों में राजतंत्रात्मक व्यवस्था थी। 'महापरिनिर्वाणसुत्त' से 6 महानगरों की जानकारी प्राप्त होती है– चंपा, राजगृह, श्रावस्ती, काशी, कौशांबी तथा साकेत। अंगुत्तर निकाय में वर्णित सोलह महाजनपदों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

1. **अंग :** अंग राज्य की राजधानी 'चंपा' थी। महाभारत एवं पुराणों के अनुसार, चंपा का प्राचीन नाम 'मालिनी' था। दीघनिकाय में उल्लेख है कि इस नगर का वास्तुकार 'महागोविंद' था। बुद्ध के समय यह भारत के छह महानगरों में से एक था। चंपा नगरी की प्रसिद्धि उसके वैभव तथा व्यापार-वाणिज्य के कारण थी। इसका अपने पड़ोसी राज्य मगध के साथ लंबा संघर्ष चला। अंतिम रूप से अंग राज्य पर मगध की विजय हुई और यह मगध का हिस्सा बन गया।
2. **अश्मक (अस्सक) :** गोदावरी नदी के तट पर स्थित यह दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद था। इसकी राजधानी पोतन या पोटिल थी। पुराणों के अनुसार, अश्मक के राजतंत्र की स्थापना इक्ष्वाकुवंशी शासकों ने की थी।

Copyright @ Sanskriti IAS

महावस्तु

यह 'विनय पिटक' से संबंधित ग्रंथ है।

> ***बुद्ध की विभिन्न मुद्राएँ (Various Mudras of Buddha)***
>
> **धर्मचक्र मुद्रा :** महात्मा बुद्ध की यह मुद्रा उनके जीवनकाल के उन लम्हों को प्रतिबिंबित करती है जब वे ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् सारनाथ के कुरुंग उपवन में प्रथम बार धार्मिक उपदेश दे रहे थे।
>
> **भूमिस्पर्श मुद्रा :** बुद्ध की यह भाव-भंगिमा बोधगया में उनके प्रबोधन की संकेतक है।
>
> **अभय मुद्रा :** यह मुद्रा महात्मा बुद्ध की शांति, सुरक्षा, दयालुता एवं भयमुक्तता को दर्शाती है।
>
> **ज्ञान मुद्रा :** बुद्ध के अँगूठे से छूने पर चक्र का निर्माण होना तथा हथेली से सीने को छूने की मुद्रा 'ज्ञान मुद्रा' को प्रदर्शित करती है।
>
> **वरद मुद्रा:** यह मुद्रा ऊर्जा की प्राप्ति के लिए पूर्णत: समर्पित होने के गुण की प्रतीक है।

बौद्ध धर्म का प्रसार (Spread of Buddhism)

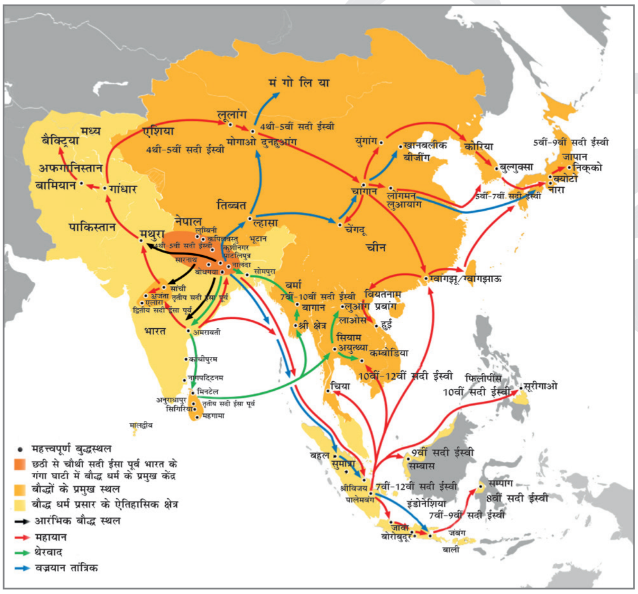

- कुषाण शासक कनिष्क के समकालीन बौद्ध विद्वान अश्वघोष, वसुमित्र, पार्श्व थे। इसी समय बौद्ध धर्म का प्रचार चीन में हुआ।
- चीन में बौद्ध धर्म के प्रचार का श्रेय कश्यप मातंग नामक बौद्ध भिक्षु को दिया जाता है। इसके अतिरिक्त धर्मरत्न नामक भिक्षु ने भी चीन में बौद्ध धर्म का प्रसार किया। बाद में कमलशील भी तिब्बत होते हुए चीन गए।
- अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र एवं पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु भेजा।
- सातवाहन काल में बौद्ध धर्म की महायान शाखा का बोलबाला था।
- गुप्त काल में भी बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ। आर्यदेव, असंग, वसुबंध, मैत्रेयनाथ तथा दिङ्नाग आदि प्रमुख बौद्ध विद्वान गुप्त काल के ही थे।
- पाल शासक बौद्ध धर्म के अंतिम महान संरक्षक थे। इसी समय बौद्ध धर्म में तंत्रवाद का विकास हुआ।
- हर्षवर्द्धन भी बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय का संरक्षक था तथा उसने प्रयाग में दो बौद्ध सम्मेलनों का आयोजन किया था।

बौद्ध धर्म की लोकप्रियता के कारण (Reasons for the Popularity of the Buddhism)

- बौद्ध धर्म का जटिल दार्शनिक वाद-विवाद से मुक्त होना।
- बौद्ध मतों के प्रचार-प्रसार हेतु सामान्य जनमानस की भाषा 'पालि' में उपदेश देना।
- बौद्ध धर्म द्वारा लचीलेपन, अर्थात् मध्यम मार्ग की अवधारणा को अपनाया जाना।
- इस धर्म को राजकीय संरक्षण मिलना।
- सामाजिक समानता के सिद्धांत को स्वीकृति प्रदान करना।

बुद्ध का सामाजिक-राजनीतिक चिंतन (Buddha's Socio-Political Thought)

- बुद्ध दंडविहीन और शस्त्रविहीन राजशासन के पक्षधर थे।
- वे संपूर्ण भूमि राजा के अधीन देखना चाहते थे। उनके अनुसार, राजा केवल शांति का रक्षक ही नहीं वरन् आर्थिक विकास के लिए भी उत्तरदायी है।
- बुद्ध जात-पाँत के विरोधी थे। उनके अनुसार कोई व्यक्ति बड़ा या छोटा कर्म से होता है न कि जन्म से। फिर भी बौद्ध धर्म ने जाति व्यवस्था के विरुद्ध कठोर संघर्ष नहीं किया, बल्कि यह धर्म भी चांडाल व निषाद को अछूत की श्रेणी में रखता है।
- बुद्ध ने भी चारों वर्गों की बात कही और इनका क्रम निर्धारित किया- क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र।

बौद्ध धर्म का मूल्यांकन (Evaluation of Buddhism)

बौद्ध धर्म के सकारात्मक पहलू (Positive Aspects of the Buddhism)

- बुद्ध ने जिस मार्ग का प्रतिपादन किया, वह अत्यंत सरल था। उन्होंने पूजा, बलि, यज्ञ आदि को नकारकर प्रत्येक व्यक्ति के लिए धर्म का द्वार खोल दिया। इस प्रकार, बुद्ध की शिक्षाओं में **प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण** की झलक मिलती है।
- बुद्ध ने चार मुख्य गुणों- प्रेम, दया, प्रसन्नता एवं शांति पर बल दिया और ये गुण जैन धर्म की अहिंसा की भावना तथा उपनिषदों की विरक्तता की भावना से अधिक सकारात्मक थे।
- बुद्ध ने दस शीलों के माध्यम से एक सामाजिक आचार संहिता का निर्माण किया तथा एक स्वस्थ और प्रगतिशील समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।

Copyright @ Sanskriti IAS

संस्कृति IAS

इकाई 6 — प्राचीन भारत में धार्मिक आंदोलन (Religious Movement in Ancient India)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'प्राचीन भारत में धार्मिक आंदोलन तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- पृष्ठभूमि
- नवीन धर्मों के उदय के कारण
- धार्मिक आंदोलन का स्वरूप
- प्रमुख भौतिकवादी चिंतक एवं उनसे संबंधित संप्रदाय
- विभिन्न धर्मों का उदय

बौद्ध धर्म
- गौतम बुद्ध
- बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ
- बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धांत
- बौद्ध संघ एवं उसकी कार्यप्रणाली
- बौद्ध संगीतियाँ
- बौद्ध धर्म के प्रमुख संप्रदाय
- बौद्ध साहित्य
- बौद्ध धर्म का प्रसार
- बुद्ध का सामाजिक-राजनीतिक चिंतन
- बौद्ध धर्म का मूल्यांकन
- बौद्ध धर्म के पतन के कारण
- बौद्ध धर्म की उपादेयता और प्रभाव

जैन धर्म
- परिचय
- जैन धर्म की शिक्षाएँ
- जैन धर्म के दार्शनिक सिद्धांत
- जैन संगीतियाँ
- प्रसिद्ध जैन मंदिर
- जैन धर्म के प्रमुख संप्रदाय
- जैन साहित्य
- जैन धर्म का समाज पर प्रभाव
- जैन धर्म का मूल्यांकन
- जैन धर्म के पतन के कारण
- बौद्ध एवं जैन धर्म में समानता तथा असमानता
- वैष्णव धर्म
- शैव धर्म
- शाक्त धर्म

पृष्ठभूमि (Background)

छठी सदी ई.पू. में जिस सामाजिक-धार्मिक आंदोलन की आधारशिला रखी गई थी, उसकी पृष्ठभूमि उत्तर वैदिक काल के अंत तक तैयार हो चुकी थी। वस्तुत: उत्तर वैदिक काल में ही धर्म के अनेक कर्मकांडीय स्वरूपों ने तथा वर्ण व्यवस्था की जटिलता ने सामाजिक शोषण की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया जिसके कारण समाज में द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न हो गई। फलत: समाज के विभिन्न वर्गों में एक-दूसरे के प्रति घृणा और असंतोष की भावना प्रबल होती गई। इस तनावपूर्ण वातावरण में मध्य-गंगा घाटी क्षेत्र में उपनिषदीय क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित तथा विवेचनशील धर्मिक नेताओं के नेतृत्व में अनेक धार्मिक संप्रदायों (लगभग 62 संप्रदाय) का उदय हुआ और उन्होंने ब्राह्मण धर्म में व्याप्त विभिन्न सामाजिक बुराइयों, कुप्रथाओं, कर्मकांडों आदि का जमकर विरोध किया। धार्मिक बहुलता एवं परंपरागत ब्राह्मण धर्म में व्याप्त बुराइयों का विरोध करने के कारण इसे सुधारवादी आंदोलन की संज्ञा प्रदान की जाती है।

नवीन धर्मों के उदय के कारण (Causes of Rise of New Religions)

छठी सदी ई.पू. में घटित हुए धर्म सुधार आंदोलनों की पृष्ठभूमि उत्तर वैदिक काल के अंत तक तैयार हो चुकी थी। तत्कालीन समाज के तनावपूर्ण वातावरण, आर्थिक क्षेत्र में हुए व्यापक परिवर्तनों एवं यज्ञ, बलि जैसी आडंबरयुक्त धार्मिक मान्यताओं ने इस धर्म सुधार आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी। अंतत: उपनिषदों के क्रांतिकारी उपदेशों और विवेचनशील धार्मिक नेताओं के अभ्युदय ने इस आंदोलन को आरंभ कर दिया। आंदोलन के उदय के लिए उत्तरदायी प्रमुख कारण इस प्रकार हैं–

सामाजिक कारण : जटिल वर्ण व्यवस्था एवं तनावपूर्ण सामाजिक जीवन

- उत्तर वैदिक काल से वर्ण व्यवस्था जटिल होती चली गई। अब वर्ण का आधार 'कर्म' न होकर 'जन्म' हो गया। समाज स्पष्टत: सुविधाभोगी एवं सुविधाविहीन वर्गों में बँट गया। ब्राह्मण एवं क्षत्रिय सुविधाभोगी वर्ग थे। इनमें से एक के हाथ में धार्मिक सत्ता थी तो दूसरे के हाथ में राजसत्ता। प्रारंभ में ये दोनों एक-दूसरे का सहयोग कर अपने विशेषाधिकारों की रक्षा करते थे। दूसरी तरफ, समाज के सुविधाविहीन वर्ग में वैश्य एवं शूद्र शामिल थे जिन्हें निम्न स्तर का दर्जा दिया गया था।
- कृषि व्यवस्था के स्थायी हो जाने, मुद्रा के चलन तथा वाणिज्य व्यापार के विकास से वैश्यों की स्थिति यद्यपि आर्थिक दृष्टि से तो मज़बूत हो रही थी किंतु सामाजिक दृष्टि से उन्हें यथेष्ट सम्मान प्राप्त नहीं था। शूद्रों की स्थिति सबसे खराब थी, उन्हें तीनों वर्णों का सेवक माना गया था।
- जब क्षत्रियों की राजनीतिक स्थिति मज़बूत हुई तो उन्हें यह मंजूर नहीं हुआ कि वे वर्ण क्रम में ब्राह्मणों से निचले स्तर पर रहें। अत: ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों के बीच वैमनस्यता बढ़ी। क्षत्रिय ऐसी व्यवस्था

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 7 — मौर्य काल (Mauryan Period)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'मौर्य काल तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- जानकारी के स्रोत
- राजनीतिक स्थिति
  - चंद्रगुप्त मौर्य
  - बिंदुसार
  - अशोक
  - अशोक के उत्तराधिकारी
- प्रशासनिक स्थिति
  - केंद्रीय प्रशासन
  - प्रांतीय प्रशासन
  - नगरीय प्रशासन
  - ग्राम प्रशासन
  - न्यायिक प्रशासन
  - गुप्तचर प्रशासन
  - राजस्व प्रशासन
  - सैन्य प्रशासन
- आर्थिक स्थिति
- सामाजिक स्थिति
- कला एवं संस्कृति
  - स्थापत्य कला
  - मूर्तिकला
  - शिक्षा, भाषा और साहित्य

परिचय (Introduction)

- मौर्य साम्राज्य भारत के महानतम साम्राज्यों में से एक था। इस साम्राज्य के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य ने मगध के नंदों का ही नहीं, अपितु उत्तर-पश्चिमी सीमांत में यूनानी क्षत्रपों की सत्ता का भी विनाश किया।
- मौर्य साम्राज्य की स्थापना के बाद भारतीय इतिहास में एक नए युग की शुरुआत हुई। यह इतिहास में पहला अवसर था जब पूरा भारत राजनीतिक तौर पर एकजुट हुआ था।
- हर्यक वंश के बिंबिसार और अजातशत्रु द्वारा रखी गई नींव पर नंद राजवंश ने वृहद् मगध साम्राज्य की स्थापना की। नंद वंश के सम्राटों ने मगध में विशाल सेना को संगठित किया तथा एक सुव्यवस्थित शासन प्रणाली की भी स्थापना की।
- इसी दौरान 326 ईसा पूर्व में यूनानी शासक सिकंदर का आक्रमण पश्चिमोत्तर भारत में हुआ। व्यास नदी के पश्चिमी तट पर पहुँचकर सिकंदर की सेना ने आगे बढ़ने से मना कर दिया। फलतः तत्कालीन नंद शासक धननंद का सामना यूनानी सेना से नहीं हो सका।
- इतिहासकारों के अनुसार, यदि सिकंदर का सामना धननंद से हुआ होता तो यह कहना कठिन होता कि देश की रक्षा का दायित्व धननंद निभाने में समर्थ होता या नहीं। हालाँकि मगध के शासक के पास विशाल सेना अवश्य थी, किंतु जनता का सहयोग उसे प्राप्त नहीं था।
- कर के अत्यधिक बोझ तथा धननंद के अत्याचारों एवं कुप्रशासन के कारण मगध की प्रजा पीड़ित हो चुकी थी। शासन के अंतिम दिनों में धननंद की सत्ता कमज़ोर हो चुकी थी तथा जनता के मध्य राजा के प्रति अविश्वास बढ़ता जा रहा था जिसका लाभ उठाते हुए चंद्रगुप्त ने कौटिल्य (चाणक्य) की सहायता से नंद राजवंश की सत्ता का उन्मूलन किया तथा मौर्य वंश की स्थापना की।

जानकारी के स्रोत (Sources of Information)

मौर्यकालीन इतिहास के संदर्भ में हमें साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों से जानकारी प्राप्त होती है जो निम्नलिखित हैं–

साहित्यिक स्रोत (Literary Source)

धार्मिक साहित्य

- धार्मिक साहित्य के अंतर्गत ब्राह्मण, जैन तथा बौद्ध साहित्य आते हैं। ब्राह्मण साहित्य में पुराणों का विशेष महत्त्व है। विष्णुपुराण में चंद्रगुप्त को निम्न कुल का बताया गया है।
- बौद्ध साहित्य एवं अनुश्रुतियों से तत्कालीन समाज एवं मौर्य प्रशासन के संदर्भ में जानकारी मिलती है। बौद्ध ग्रंथों में दीपवंश, महावंश, महावंश की टीका, महाबोधि वंश, दिव्यावदान आदि महत्त्वपूर्ण हैं। दीपवंश से श्रीलंका में अशोक द्वारा किए गए बौद्ध धर्म के प्रसार की जानकारी मिलती है।
- जैन ग्रंथों में भद्रबाहु के कल्पसूत्र एवं हेमचंद्र के परिशिष्टपर्वन् में चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन की घटनाओं का उल्लेख मिलता है।

धर्मेत्तर साहित्य

- इसके अंतर्गत कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, पतंजलि का महाभाष्य, कल्हण कृत राजतरंगिणी, क्षेमेंद्र कृत बृहत्कथामंजरी इत्यादि ग्रंथ शामिल हैं।
- कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र से मौर्यकालीन राजनीति और लोक प्रशासन की जानकारी मिलती हैं। साथ ही, इस ग्रंथ से मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक व्यवस्था के विषय में प्रामाणिक जानकारी भी प्राप्त होती है।

Copyright @ Sanskriti IAS

- मौर्य साम्राज्य का अंतिम शासक बृहद्रथ था जिसकी हत्या करने के पश्चात् उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 185 ई.पू. में शुंग वंश की स्थापना की।
- मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों में अयोग्य एवं निर्बल उत्तराधिकारी, प्रशासन का अत्यधिक केंद्रीकरण, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर विद्यमान असमानताएँ, करों की अधिकता, प्रांतीय अधिकारियों के अत्याचार एवं शोषण तथा अशोक की शांति की नीति को मुख्य रूप से सम्मिलित किया जाता है।
- इस प्रकार 185 ई.पू. में विशाल एवं समृद्ध मौर्य साम्राज्य का पतन सुनिश्चित हो गया जिसके साथ ही भारतीय इतिहास की राजनीतिक एकता भी विखंडित हो गई। इस दौरान देश के उत्तर-पश्चिमी मार्गों से अनेकों विदेशी आक्रमण हुए जिन्होंने भारत में स्वतंत्र सत्ता की स्थापना की। साथ ही, दक्षिण भारत में भी मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् नवीन राज्यों का उदय हुआ जिन्होंने मौर्योत्तरकालीन भारत के राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में अपना योगदान दिया।

प्रशासनिक स्थिति (Administrative Situation)

- आरंभिक मौर्य शासकों ने सुदृढ़ प्रशासनिक संरचना का निर्माण किया जो कि भारत की प्रथम केंद्रीकृत प्रशासन प्रणाली के रूप में उल्लेखित की जाती है। प्रशासन का केंद्रबिंदु (सर्वोच्च पदाधिकारी) राजा होता था। साथ ही, वह कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं व्यवस्थापिका का भी प्रमुख होता था।
- राजा में सत्ता का केंद्रीकरण होते हुए भी वह निरंकुश नहीं होता था क्योंकि अर्थशास्त्र में राजा को शासन संबंधी विषयों में सलाह देने हेतु मंत्रिपरिषद् का उल्लेख किया गया है।
- अशोक के शिलालेखों में इस परिषद् को 'परिषा' कहा गया है। अशोक के छठें शिलालेख में यह कहा गया है कि परिषद् राज्य की नीतियों एवं राजाज्ञाओं पर विचार-विमर्श करने का कार्य करती थी। साथ ही, नीतियों में संशोधन का सुझाव भी देती थी।
- मंत्रिपरिषद् के अतिरिक्त मंत्रिमंडल की भी चर्चा मिलती है। मंत्रिमंडल के प्रमुख सदस्यों का चुनाव अमात्यों (शासन तंत्र के उच्च अधिकारियों का वर्ग) में से होता था।
- राजा द्वारा मुख्यमंत्री एवं पुरोहित का चयन उनके चरित्र की भलीभाँति जाँच के बाद किया जाता था जिसे 'उपधा परीक्षण' कहते थे।

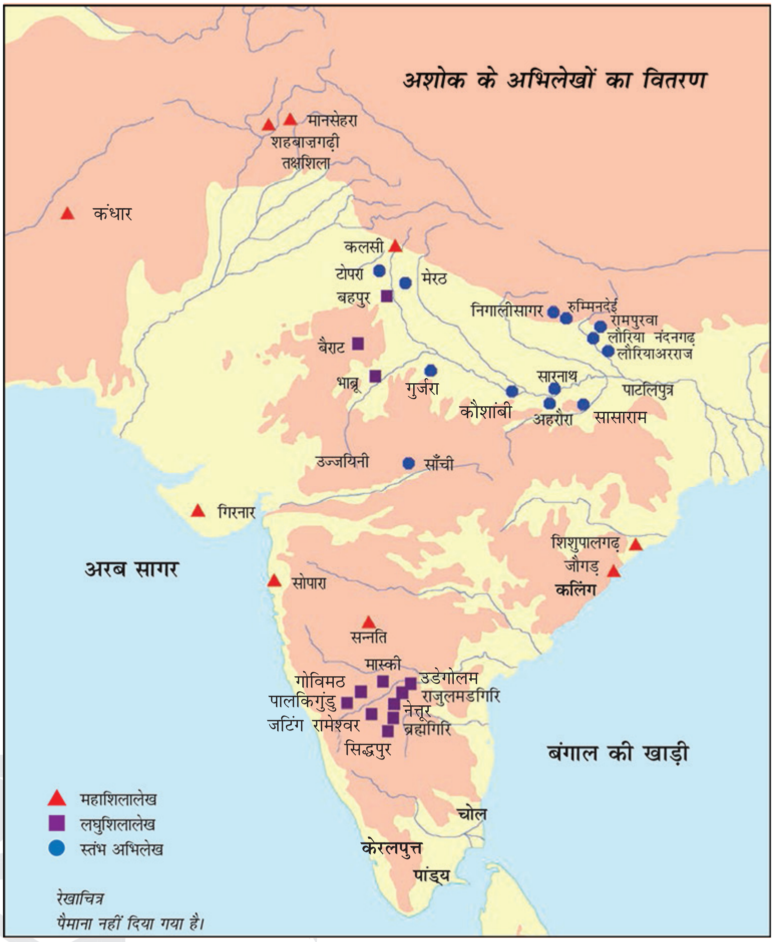

केंद्रीय प्रशासन (Central Administration)

- मौर्य साम्राज्य में केंद्रीय प्रशासन के संचालन का दायित्व एक विशाल वर्ग पर था जो कि साम्राज्य के विभिन्न भागों से प्रशासन का संचालन करते थे।
- अर्थशास्त्र के अनुसार, इसमें शामिल शीर्षस्थ अधिकारियों को 'तीर्थ' कहा जाता था। इनकी संख्या अठारह थी। इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण पदाधिकारी (तीर्थ) थे- मंत्री या प्रधानमंत्री, पुरोहित, सेनापति, युवराज, समाहर्ता, सन्निधाता आदि। इन विशेष पदाधिकारियों का वेतन 48,000 पण वार्षिक था, जबकि अन्य पदाधिकारियों का वेतन 12,000 पण वार्षिक था।
- ध्यातव्य है कि तीर्थ शब्द का प्रयोग केवल एक-दो स्थानों पर ही हुआ है, अधिकांश जगह इन्हें 'महामात्र' कहा गया है।
- सबसे महत्त्वपूर्ण तीर्थ या महामात्र मंत्री एवं पुरोहित थे। राजा इन्हीं की सलाह से अन्य मंत्रियों एवं अमात्यों की नियुक्ति करता था तथा इन्हीं के माध्यम से अन्य अधिकारियों पर नियंत्रण भी रखता था। ध्यातव्य है कि चंद्रगुप्त मौर्य के समय ये दोनों विभाग कौटिल्य के अधीन थे। अशोक के समय प्रधानमंत्री का पद राधागुप्त के पास था।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 8	मौर्योत्तर काल (Post-Mauryan Period)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'मौर्योत्तर काल और उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय

देशी राज्य
- शुंग वंश (185 ई.पू. से 75 ई.पू.)
  - जानकारी के स्रोत
  - राजनीतिक स्थिति
  - प्रशासनिक स्थिति
  - सामाजिक स्थिति
  - धार्मिक स्थिति
  - आर्थिक स्थिति
  - कला एवं संस्कृति
- कण्व वंश (75 ई.पू. से 30 ई.पू.)
  - जानकारी के स्रोत
  - प्रमुख ऐतिहासिक बिंदु
- सातवाहन वंश
  - जानकारी के स्रोत
  - राजनीतिक स्थिति
  - प्रशासनिक स्थिति
  - सामाजिक स्थिति
  - धार्मिक स्थिति
  - आर्थिक स्थिति
  - कला एवं संस्कृति
- चेदि वंश
  - जानकारी के स्रोत
  - खारवेल
  - खारवेल का मूल्यांकन

विदेशी राज्य
- हिंद-यवन
  - जानकारी के स्रोत
  - राजनीतिक स्थिति
  - हिंद-यवनों का पतन
  - हिंद-यवनों का योगदान/प्रभाव
- शक/इंडो-सीथियन
  - जानकारी के स्रोत
  - शकों की विभिन्न शाखाएँ
  - महाक्षत्रप 'रुद्रदामन' व उसका जूनागढ़ अभिलेख
- पह्लव/पार्थियन
  - जानकारी के स्रोत
  - प्रमुख ऐतिहासिक बिंदु
- कुषाण
  - जानकारी के स्रोत
  - राजनीतिक स्थिति
  - प्रशासनिक स्थिति
  - सामाजिक स्थिति
  - धार्मिक स्थिति
  - आर्थिक स्थिति
  - कला एवं संस्कृति
- मौर्योत्तरकालीन स्थल व उनकी वर्तमान पहचान
- मौर्योत्तरकालीन रचनाएँ व रचनाकार

परिचय (Introduction)

- लगभग 323 ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित तथा सम्राट अशोक के शासनकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा महान मौर्य साम्राज्य 185 ईसा पूर्व के आसपास विघटित हो गया। इसी के अवशेषों पर अनेक छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। इन्होंने न सिर्फ भारत की राजनीतिक एकता के खंडित होने की सूचना दी, बल्कि राजनीतिक विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति को भी बढ़ावा दिया। वास्तव में, केंद्रीकृत मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात् चार देशी और चार विदेशी राज्यों सहित कुल आठ प्रमुख राजवंशों ने भारतीय राजनीतिक रंगमंच पर अपनी-अपनी किस्मत आज़माई। इस प्रक्रिया में उनमें से कुछ तो खासे प्रभावी रहे तो कुछ इतिहास में अपना नाम दर्ज भर कराने के लिए ही अस्तित्व में आए थे।
- वस्तुत: इन चार देशी राज्यों में शुंग, कण्व, सातवाहन तथा चेदि वंश शामिल थे, जबकि चार विदेशी राज्यों में हिंद-यवन, शक/सीथियन, पार्थियन/पह्लव तथा कुषाण राजवंशों का नाम आता है। किंतु, यहाँ हमें स्पष्ट रूप से यह समझ लेना चाहिए कि ये सभी राजवंश कालखंड में क्रमिक रूप में एक के बाद एक अंकित नहीं हुए, बल्कि इनमें से अधिकांश एक-दूसरे के समकालीन उपस्थित थे। इसी बीच यह भी ध्यान देने योग्य है कि उत्तर भारत व दक्कन में उक्त आठ राजवंशों के समकालीन सुदूर दक्षिण में चोल, चेर तथा पांड्य राज्य भी अपना अस्तित्व बनाए हुए थे। सुदूर दक्षिण के इन राज्यों के काल को 'संगम काल' की संज्ञा दी जाती है। संगम कविताओं में इन तीनों शासक परिवारों को संयुक्त रूप से 'मुवेन्दार' पद से संबोधित किया गया है। इस तमिल शब्द का अर्थ होता है- 'तीन मुखिया'।
- आगे चलकर समय व परिस्थितियों के अनुरूप इन सभी राजवंशों के मध्य कटुतापूर्ण या मित्रतापूर्ण संबंध भी स्थापित होते रहे। उदाहरण के लिए- जहाँ एक तरफ शुंगों व यवनों के मध्य, चेदि शासक खारवेल व सातवाहनों के मध्य, शकों व सातवाहनों के मध्य, खारवेल व पांड्य के मध्य भयंकर युद्ध हुए, वहीं दूसरी तरफ सातवाहन शासक वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी ने शक शासक रुद्रदामन की पुत्री के साथ विवाह करके तथा पराजित पांड्य शासक ने विजेता खारवेल को मुक्तमणियों का उपहार प्रदान करके मित्रतापूर्ण संबंध भी स्थापित किए। फिर इन्हीं कटु और मधुर संबंधों की पृष्ठभूमि में इन राज्यों का भौगोलिक विस्तार भी परिवर्तित होता रहा।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 9	गुप्त साम्राज्य (Gupta Empire)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'गुप्त साम्राज्य और उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- पृष्ठभूमि
- जानकारी के स्रोत
  - साहित्यिक स्रोत
  - पुरातात्विक स्रोत
- राजनीतिक स्थिति
  - चंद्रगुप्त प्रथम (319 से 350 ई.)
  - समुद्रगुप्त (350 से 375 ई.)
  - चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (375 से 415 ई.)
  - कुमारगुप्त प्रथम (415 से 455 ई.)
  - स्कंदगुप्त (455 से 467 ई.)
- प्रशासनिक स्थिति
  - केंद्रीय प्रशासन
  - प्रांतीय प्रशासन
  - ज़िला प्रशासन
  - नगरीय प्रशासन
  - स्थानीय प्रशासन
  - न्यायिक प्रशासन
  - सैन्य प्रशासन
- आर्थिक स्थिति
- सामाजिक स्थिति
- धार्मिक स्थिति
- कला एवं संस्कृति
  - स्थापत्य कला
  - मूर्तिकला
  - चित्रकला
  - शिक्षा एवं साहित्य
  - विज्ञान एवं तकनीक

पृष्ठभूमि (Background)

- मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् लंबे समय तक कोई विशाल साम्राज्य अस्तित्व में नहीं आ सका। यद्यपि, सातवाहनों ने दक्कन में अपने राज्य का विस्तार किया तथा इसी समय उत्तर में कुषाण शासकों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया। कालांतर में तीसरी सदी के मध्य तक इन दोनों साम्राज्यों का पतन आरंभ हो गया था।
- अंततः कुषाण साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उत्तर भारत में गुप्त साम्राज्य का उदय हुआ जिसने कुषाण शासकों को पराजित कर उसके व्यापक भाग पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। संभवतः ये कुषाणों के सामंत थे।
- गुप्त काल के शासकों के लिए वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य का क्षेत्र अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि आरंभिक गुप्त वंश के शासकों से संबंधित मुद्राएँ एवं अभिलेख मुख्य रूप से यहीं पर पाए गए हैं।

जानकारी के स्रोत (Sources of Information)

साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)

- गुप्तकालीन इतिहास के अध्ययन स्रोत पर्याप्त प्रामाणिक हैं। साहित्यिक स्रोत के अंतर्गत गुप्तकालीन पुराण, काव्य, नाटक, स्मृतियाँ आदि शामिल हैं। पुराणों के अंतर्गत विष्णु पुराण, वायु पुराण एवं ब्रह्म पुराण से गुप्तों के इतिहास और उनकी राज्य सीमा के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है।
- सुप्रसिद्ध नाटककार विशाखदत्त ने 'देवीचंद्रगुप्तम्' नाटक की रचना की। इस नाटक में चंद्रगुप्त द्वारा अपने भाई रामगुप्त का वध तथा उसकी पत्नी ध्रुवस्वामिनी के साथ विवाह एवं उसके राज्याभिषेक का उल्लेख किया गया है।
- कालिदास ने ऋतुसंहारम्, कुमारसंभवम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् एवं अभिज्ञानशाकुंतलम् आदि महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। ये कृतियाँ गुप्तकालीन इतिहास पर विशेष प्रकाश डालती हैं।
- इस दृष्टिकोण से शूद्रक द्वारा रचित 'मृच्छकटिकम्' भी एक महत्त्वपूर्ण कृति है। इससे गुप्तकालीन जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।
- वात्स्यायन के प्रसिद्ध ग्रंथ कामसूत्र से तत्कालीन समाज में प्रचलित वेशभूषा, आभूषण, वाद्य-संगीत तथा नागरिकों के मनोरंजन से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- 'मंजुश्रीमूलकल्प' बौद्ध धर्म की महायान शाखा से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है जिसमें विभिन्न राजवंशों का उल्लेख मिलता है।

फाह्यान का यात्रा वृत्तांत

- फाह्यान ने भारत में संकिसा एवं श्रावस्ती की यात्रा की तथा श्रावस्ती में अवस्थित जेतवन विहार की प्रशंसा की।
- लुंबिनी एवं वैशाली की यात्रा के पश्चात् फाह्यान ने पाटलिपुत्र की यात्रा की। पाटलिपुत्र में अवस्थित अशोक के राजमहल से फाह्यान अत्यधिक प्रभावित हुआ। इस महल की भव्यता से प्रभावित होकर फाह्यान ने इसे दैत्यों द्वारा निर्मित बताया।

Copyright @ Sanskriti IAS

- अजंता के गुहा चित्रों के तीन विषय अलंकरण, चित्रण और वर्णन हैं। अलंकरण के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के फूल-पत्तियों, वृक्षों और पशुओं के चित्रों को सम्मिलित किया जाता है। चित्रण में बुद्ध और बोधिसत्व का अंकन शामिल है। इन चित्रों में बुद्ध के भौतिक जीवन से संबंधित घटनाओं का आकर्षक एवं सुंदर चित्रण मिलता है। इसके अतिरिक्त, जातक ग्रंथों से ली गई कथाओं को वर्णनात्मक ढंग से उकेरा गया है।
- अजंता की गुफाओं में फ्रेस्को और टेम्पेरा दोनों ही विधियों से चित्र बनाए गए हैं। फ्रेस्को विधि में चित्र को गीले प्लास्टर पर बनाया जाता था जिसमें विशुद्ध रंगों के प्रयोग से चित्रकारी की जाती थी।
- टेम्पेरा विधि के अंतर्गत चित्र को सूखे प्लास्टर पर बनाया जाता था। इस विधि में चित्र बनाने से पूर्व दीवार को अच्छी तरह से साफ करके उसके ऊपर लेप चढ़ाया जाता था। यह लेप गोबर, सफेद मिट्टी, शिलाचूर्ण आदि को मिश्रित करके तैयार किया जाता था। चित्र बनाने के लिए लाल खड़िया का प्रयोग होता था। इसके अतिरिक्त, इसमें रंगों के साथ अंडे की सफेदी और चूने को मिलाया जाता था।
- अजंता के गुहा चित्रों में लाल, नीला, पीला, काला और सफेद रंग प्रयोग में लाए जाते थे। विदित है कि अजंता से पूर्व कहीं भी नीले रंग का उपयोग नहीं हुआ था। इन गुफाओं से प्राप्त चित्रों की चमक अद्वितीय और अलौकिक है जो रात के अँधेरे में भी चमकते हैं।

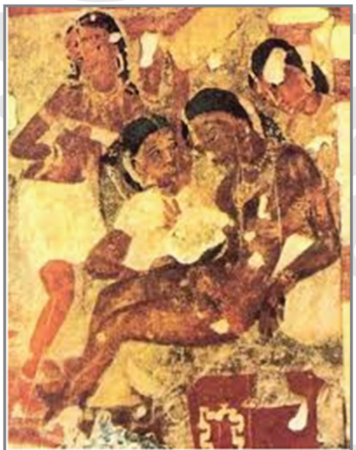

मरणासन्न राजकुमारी का चित्र

- सोलहवीं गुफा में चित्रित 'मरणासन्न राजकुमारी' का चित्र सर्वाधिक सुंदर एवं आकर्षक है जिसकी करुणा और वियोग की भावना दर्शनीय है।
- इसी गुफा के एक अन्य चित्र में बुद्ध के 'महाभिनिष्क्रमण' का चित्रांकन मिलता है। इस चित्र में बुद्ध की वैराग्य भावना को दर्शाया गया है।
- सत्रहवीं गुफा में विविध प्रकार के चित्र बनाए गए हैं, इसी कारण से इसे चित्रशाला भी कहा जाता है। इन चित्रों में बुद्ध के जन्म, महाभिनिष्क्रमण और महापरिनिर्वाण की घटनाओं का अंकन मिलता है। इस गुफा से प्राप्त चित्रों में 'माता और शिशु' नामक चित्र सर्वाधिक आकर्षक है। यह चित्र संभवतः यशोधरा और राहुल (बुद्ध की पत्नी और पुत्र) को समर्पित है।
- छत पर सजावट का एक उदाहरण गुफा संख्या 17 में मिलता है। इसमें 'लड़ते हुए हाथी' के चित्र का अंकन किया गया है। गौरवपूर्ण संचलन तथा रेखीय लयबद्धता के कारण इस चित्र को कला की एक सर्वोत्तम कृति के रूप में जाना जाता है।

बाघ चित्रकला (Bagh Painting)

- बाघ की गुफाएँ मध्य प्रदेश के धार ज़िले में स्थित विंध्य पर्वत श्रेणी में अवस्थित हैं जिसमें कुल 9 गुफाएँ हैं। इन गुफाओं को अजंता की गुफाओं के समकालीन माना जाता है।

बाघ गुफा का एक चित्र

- यहाँ की चित्रकला लौकिक और धर्मनिरपेक्ष कला का उदाहरण प्रस्तुत करती है।
- इनमें चौथी-पाँचवीं गुफाओं के भित्तिचित्र सर्वाधिक सुरक्षित अवस्था में हैं। इन दोनों गुफाओं को संयुक्त रूप से रंगमहल भी कहा जाता है। इन गुफाओं के चित्रों में नृत्य-संगीत के दृश्य, अश्वों और हाथियों पर शोभायात्रा के दृश्य, राजभवन में बैठी युवतियों के दृश्य तथा शोकाकुल स्त्री का दृश्य प्रमुख हैं।
- बाघ की गुफाओं में अश्व आकृतियों को अत्यधिक सजीवता के साथ चित्रित किया गया है। नृत्य और संगीत के दृश्यों से तत्कालीन समाज के आमोद-प्रमोद के विषय में जानकारी मिलती है। साथ ही, स्वच्छंदता पूर्वक जीवनयापन के बारे में भी पता चलता है।

शोकाकुल स्त्री का दृश्य

- इन चित्रों से तत्कालीन वेशभूषा, आभूषण, केश विन्यास अदि का चित्रण अत्यधिक कुशलता और सजीवता के साथ किया गया है।
- इसके अतिरिक्त, गुफा की छत पर मनुष्य, पशु, पक्षी, पुष्प, लता आदि का भी मनोहारी चित्रण मिलता है।
- इन चित्रों के निर्माण हेतु चिकनी दीवार पर चूने की सफेदी की जाती थी। इस सफेदी के सूखने पर चित्रों का निर्माण किया जाता था। इन चित्रों में लाल, पीला, सफेद और काले रंग का प्रयोग अधिक मात्रा में मिलता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 10	गुप्तोत्तर काल (Post Gupta Period)

गुप्तोत्तर काल
(Post Gupta Period)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'गुप्तोत्तर काल तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- वल्लभी का मैत्रक वंश
- मालवा के यशोधर्मन
- कन्नौज का मौखरी वंश
- बंगाल का गौड़ वंश
- स्थानेश्वर का पुष्यभूति वंश

परिचय (Introduction)

- प्राचीन भारत के राजनीतिक इतिहास में गुप्त वंश के पतन के पश्चात् विकेंद्रीकरण एवं क्षेत्रीयता की भावना का विकास हुआ जिसने क्षेत्रीय शासकों और सामंतों को भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सत्ता सँभालने के लिए प्रेरित किया।
- इस समय कुछ विशाल शक्तियों की स्थापना हुई, किंतु गुप्तोत्तर काल के दौरान किसी भी शक्ति ने अखिल भारतीय स्वरूप ग्रहण नहीं किया। इस काल की छोटी-बड़ी सभी शक्तियाँ परस्पर संघर्षो में उलझी रहीं।
- गुप्तोत्तर काल में उत्तर एवं पश्चिम भारत की राजनीति में जिन क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ उनमें वल्लभी का मैत्रक वंश मालवा के यशोधर्मन, कन्नौज का मौखरी वंश, बंगाल का गौड़ वंश और थानेश्वर का पुष्यभूति वंश प्रमुख हैं।

वल्लभी का मैत्रक वंश (Maitraka Dynasty of Vallabhi)

- गुप्त काल में सौराष्ट्र गुप्त शासकों का अधीनस्थ प्रांत था जहाँ मैत्रक वंश की स्थापना भट्टार्क नामक व्यक्ति ने की थी। इन्होंने वल्लभी को अपनी राजधानी बनाया।
- पश्चिमी भारत के एक सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य के रूप में वल्लभी का उदय हुआ जिसका विस्तार गुजरात, कच्छ एवं पश्चिमी मालवा तक ही था।
- इस वंश के आरंभिक नरेश गुप्त सम्राटों के यहाँ सामंत के रूप में कार्य करते थे। किंतु, पाँचवीं सदी के अंत तक इस वंश के उत्तराधिकारियों ने सौराष्ट्र में गुप्त वंश की अधीनता से मुक्त होकर अपनी शक्तिशाली सत्ता को स्थापित कर लिया था। ध्रुवसेन द्वितीय इस राजवंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। यह हर्ष का समकालीन था।
- इसी के समय में ह्वेनसांग भारत आया था। ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांत में ध्रुवसेन द्वितीय का उल्लेख मिलता है जिसमें उसे बौद्ध धर्म का संरक्षक बताया गया है।
- शिलादित्य सप्तम मैत्रक वंश का अंतिम शासक था। आठवीं सदी के उत्तरार्द्ध में अरब आक्रमणकारियों ने मैत्रक वंश के अंतिम राजा की हत्या करके वल्लभी को पूर्ण रूप से छिन्न-भिन्न कर दिया।
- इस राजवंश के शासक बौद्ध धर्म में विश्वास रखते थे और इन्होंने अनेक बौद्ध विहारों को दान भी दिया था।
- मैत्रक शासनकाल में वल्लभी शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था। वल्लभी में स्थित विश्वविद्यालय को पश्चिमी भारत में, पूर्वी भारत में नालंदा विश्वविद्यालय के समान ही ख्याति प्राप्त थी।
- इत्सिंग ने इस शिक्षा केंद्र की प्रशंसा की थी और बताया कि यहाँ सौ विहार स्थापित थे जिनमें छह हज़ार भिक्षु रहते थे। इसमें देश के अलग-अलग क्षेत्रों से लोग शिक्षा ग्रहण करने आते थे। यहाँ न्याय, विधि, अर्थशास्त्र, साहित्य, धर्म आदि विभिन्न विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती थी। सातवीं सदी में यहाँ के प्रमुख आचार्य गुणमति और स्थिरमति थे।
- वल्लभी राज्य के साथ ही इस विश्वविद्यालय का विनाश भी अरब आक्रमणकारियों द्वारा ही किया गया था। शिक्षा के क्षेत्र में प्रसिद्ध होने के साथ-साथ वल्लभी व्यापार एवं वाणिज्य का भी एक प्रमुख केंद्र माना जाता था।

मालवा के यशोधर्मन (Yashodharman of Malwa)

- गुप्त वंश के पतन में हूणों के साथ-साथ मालवा के यशोधर्मन का भी योगदान माना जाता है जो लगभग 530 ई. के दौरान मध्य भारत की राजनीति में एक प्रमुख वंश के रूप में सामने आया।
- मंदसौर से प्राप्त दो अभिलेखों से यशोधर्मन की उपलब्धियों के बारे में जानकारी मिलती है। हूण शासक तोरमाण को पराजित करने के कारण इस अभिलेख में यशोधर्मन को 'अधिराज' की संज्ञा प्रदान की गई। इसके अलावा, इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि यशोधर्मन ने हूण नरेश मिहिरकुल को भी पराजित किया था।
- इसी तरह, हरिषेण के अजंता अभिलेख से पता चलता है कि इसने गुजरात, मालवा, कोसल, आंध्र, कुंतल आदि पर भी अधिकार कर लिया था।

कन्नौज का मौखरी वंश (Maukhari Dynasty of Kannauj)

- मालवा के यशोधर्मन की मृत्यु के पश्चात् आर्यावर्त क्षेत्र में मौखरियों के शासन की शुरुआत हुई। इस वंश का संस्थापक हरिवर्मा को माना जाता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 11

संगम काल
(Sangam Period)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'संगम काल तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- पृष्ठभूमि : महापाषाण संस्कृति
  - महापाषाणिक स्मारकों के प्रकार
  - महापाषाण संस्कृति की सामान्य विशेषताएँ
- संगम काल : परिचय
  - जानकारी के स्रोत
  - तीन संगमों का आयोजन
  - राजनीतिक स्थिति
  - प्रशासनिक स्थिति
  - सामाजिक स्थिति
  - धार्मिक स्थिति
  - आर्थिक स्थिति
  - कला एवं स्थापत्य
  - संगमकालीन प्रमुख शब्दावलियाँ

पृष्ठभूमि : महापाषाण संस्कृति (Background : The Megalith Culture)

- 'मेगालिथ' (Megalith) शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्दों 'मेगास' (Megas) व 'लिथॉस' (Lithos) से हुई है जिनका अर्थ क्रमशः 'बड़ा/महा' तथा 'पत्थर/पाषाण' होता है। सर्वप्रथम, कर्नल मीडोज ने 1852 ई. से 1862 ई. की समयावधि के दौरान कर्नाटक के 'शोरापुर-दोआब' क्षेत्र में खोज अभियान चलाया और वहाँ से विशाल पाषाण संरचनाएँ प्राप्त कीं। चूँकि ये संरचनाएँ विशिष्ट प्रकार की कब्रें थीं जिनके निर्माण हेतु बड़े-बड़े पत्थरों का प्रयोग किया गया था, इसलिए इस संस्कृति को 'महापाषाण संस्कृति' का नाम दिया गया।
- विंध्य पर्वत से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैले विस्तृत भू-भाग को 'दक्षिण भारत' के नाम से जाना जाता है। भारत का यह त्रिभुजाकार प्रदेश तीन ओर से समुद्र से घिरा होने के कारण 'प्रायद्वीपीय भारत' कहलाता है। सुदूर दक्षिण के क्षेत्र को 'तमिलकम्' या 'तमिषकम्' कहा जाता है। वस्तुतः महापाषाण संस्कृति का विस्तार मुख्यतः दक्षिण भारत में था, किंतु इसके कुछ साक्ष्य भारत के अन्य भागों में भी प्राप्त हुए हैं।

महापाषाणिक स्मारकों के प्रकार (Types of Megalithic Monuments)

- वी.डी. कृष्णस्वामी द्वारा महापाषाण कब्रों को उनकी संरचना के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया गया है–
  - कक्षयुक्त कब्रें
  - कब्रविहीन स्मारक
  - कक्षविहीन कब्रें
- **कक्षयुक्त कब्रें :** आकृति की दृष्टि से ये कब्रें चौकोर, समकोण, आयताकार, विषम चतुर्भुजाकार इत्यादि हैं। इनके निर्माण हेतु चारों ओर पत्थर के टुकड़ों को खड़ा करके ऊपर से ढक दिया जाता था। इस प्रकार की कब्रों में प्रवेश करने हेतु एक विशिष्ट छिद्र (Port-hole) भी होता था।
- **कक्षविहीन कब्रें :** इस प्रकार की कब्रों के निर्माण हेतु ज़मीन में एक गड्ढा बनाकर उसे चारों तरफ से पत्थरों से घेर दिया जाता था और एक कलश में शव के अवशेष रखकर उसे गड्ढे में दफना दिया जाता था।
- **कब्रविहीन स्मारक :** इस श्रेणी की महापाषाणिक संरचनाओं के निर्माण हेतु बड़े-बड़े पत्थरों को एक-दूसरे के सहारे खड़ा कर दिया जाता था।

प्रमुख बिंदु (Important Points)

- दक्षिण भारत में इस संस्कृति का विस्तार तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र आदि राज्यों में था। इन राज्यों के प्रमुख महापाषाणिक स्थलों में आदिचनल्लूर, पेरूमलमलाई, टेनकासी, टेंगक्कल, मंगडु, ब्रह्मगिरि, मास्की, हल्लूर, टी. नरसीपुर, हनामसागर, अमरावती, नागार्जुनकोंडा, अमृतमंगलम्, पोरकलम आदि प्रमुख हैं। इन दक्षिण भारतीय स्थलों के अतिरिक्त विंध्य क्षेत्र, उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर भारत आदि क्षेत्रों से भी महापाषाण संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- देश के विभिन्न हिस्सों में पाए गए महापाषाण स्थलों में से कुछ लौहयुगीन हैं, कुछ लौह युग से पूर्ववर्ती तो कुछ परवर्ती हैं। इसलिए, इस संस्कृति के काल-निर्धारण को लेकर विद्वानों के मध्य गहरे मतभेद हैं। फिर भी, एक अनुमान के अनुसार महापाषाण संस्कृति का कालक्रम लगभग 1000 ईसा पूर्व से लेकर दूसरी-तीसरी सदी ई. तक माना जा सकता है।
- महापाषाण संस्कृति वास्तव में कब्रों के विशिष्ट प्रकार को सूचित करती है। इन कब्रों में मानव शवों के साथ-साथ अन्य प्रकार की सामग्रियाँ भी दफनाई जाती थीं, जैसे– मिट्टी के बर्तन, लौह उपकरण, पशुओं की हड्डियाँ इत्यादि। मिट्टी के बर्तनों में लाल तथा काले मृद्भांड अधिक प्रचलित थे, जबकि लौह उपकरणों में तीर, त्रिशूल, भाले, हँसिया, फावड़ा, कुल्हाड़ी, खुरचनी आदि प्रमुख थे। इन लौह उपकरणों में युद्ध व शिकार हेतु प्रयोग किए जाने वाले औज़ारों की संख्या, कृषि में प्रयुक्त औज़ारों से अधिक पाई गई है; अर्थात् महापाषाणिक लोगों की कृषि उन्नत अवस्था में नहीं थी। इनके द्वारा उपजाई जाने वाली फसलों में धान, रागी, जौ, चना आदि प्रमुख थीं। ये लोग कृषि कार्य में सिंचाई का प्रयोग भी करते थे।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 12	दक्षिण भारत का इतिहास (History of South India)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'दक्षिण भारत का इतिहास तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- पृष्ठभूमि
- चालुक्य वंश
  - राजनीतिक स्थिति
  - प्रशासनिक स्थिति
  - धार्मिक स्थिति
  - कला एवं संस्कृति
- राष्ट्रकूट वंश
  - राजनीतिक स्थिति
  - प्रशासनिक स्थिति
  - कला एवं संस्कृति
- पल्लव वंश
  - राजनीतिक स्थिति
  - प्रशासनिक स्थिति
  - धार्मिक स्थिति
  - कला एवं संस्कृति
- चोल वंश
  - राजनीतिक स्थिति
  - प्रशासनिक स्थिति
  - धार्मिक स्थिति
  - कला एवं संस्कृति

पृष्ठभूमि (Background)

- गुप्त वंश के पतन के पश्चात् लगभग एक सहस्राब्दी तक विकेंद्रीकरण और क्षेत्रीयता की भावना का प्रसार हुआ। इस समय भारतीय उपमहाद्वीप में कई विशाल शक्तियों का उदय हुआ, किंतु किसी भी राजवंश ने अखिल भारतीय स्वरूप को ग्रहण नहीं किया।
- हर्यक वंश से लेकर गुप्त काल तक लगभग हज़ार वर्षों तक मगध सर्वोच्च राज्य के रूप में स्थापित रहा जो गुप्त काल के पश्चात् उत्पन्न हुई अस्थिर परिस्थितियों के कारण अपनी पूर्ववत स्थिति में लौट गया। यही कारण है कि गुप्तोत्तर काल में उत्तरी भारत में हर्षवर्द्धन को छोड़कर किसी भी महत्त्वपूर्ण शक्ति का उदय न हो सका।
- इसके विपरीत, लगभग 550-750 ई. के दौरान दक्षिण भारत राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना रहा जहाँ गुप्तोत्तर काल में विभिन्न महत्त्वपूर्ण शक्तियों का उदय हुआ।

चालुक्य वंश (Chalukya Dynasty)

राजनीतिक स्थिति (Political Situation)

बादामी के चालुक्य

- चालुक्य वंश का प्रथम पराक्रमी शासक पुलकेशिन प्रथम था जिसने 550 ई. से 566-67 ई. तक शासन किया। इसने अपनी राजधानी वातापीपुर (बादामी) में स्थापित की जो वर्तमान कर्नाटक के बीजापुर ज़िले में अवस्थित है। पुलकेशिन प्रथम ने श्री पृथ्वीवल्लभ, सत्याश्रय और रणविक्रम उपाधियों को धारण किया।
- पुलकेशिन प्रथम के पश्चात् उसका पुत्र कीर्तिवर्मन प्रथम 566-67 ई. में चालुक्य वंश का शासक बना। इसने बनवासी के कदंबों को पराजित किया। 'महाकूट स्तंभ अभिलेख' में कीर्तिवर्मन को बहुसुवर्ण अग्निष्टोम यज्ञ करने वाला शासक बताया गया है। इसने पुरु-रणपराक्रम, पृथ्वीवल्लभ एवं सत्याश्रय विरुद को धारण किया था। इसके अलावा, इसे वातापी का प्रथम निर्माता भी कहा जाता है।
- 597-98 ई. में मंगलेश ने बादामी की सत्ता को सँभाला। इसने कलचुरियों और कदंबों को युद्ध में परास्त किया। वहीं दूसरी तरफ, वल्लभी शासक से मंगलेश को पराजय का सामना करना पड़ा।
- मंगलेश की मृत्यु के बाद 611 ई. में पुलकेशिन द्वितीय ने बादामी की सत्ता सँभाला। इसने सत्याश्रय श्री पृथ्वीवल्लभ महाराज के विरुद को धारण किया। पुलकेशिन ने कदंबों की राजधानी बनवासी को विजित किया। इसके अलावा, इसने पुष्यभूति वंश के हर्षवर्द्धन को भी परास्त किया तथा विजय के पश्चात् 'परमेश्वर' की उपाधि धारण की। इन विजयों के पश्चात् पल्लव नरेश नरसिंहवर्मन से हुए युद्ध में पुलकेशिन द्वितीय मृत्यु को प्राप्त हो गया।
- पुलकेशिन द्वितीय की उपलब्धियों की चर्चा 'एहोल प्रशस्ति' में की गई है। इस प्रशस्ति की रचना उसके दरबारी कवि रविकीर्ति ने की थी। इसके अलावा, चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 641 ई. में चालुक्य राज्य का भ्रमण किया तथा अपने यात्रा वृत्तांत में पुलकेशिन की शक्ति और शासन पद्धति की प्रशंसा की।
- पुलकेशिन द्वितीय के छोटे भाई विष्णुवर्द्धन को विषमसिद्धि के नाम से भी जाना जाता है। एहोल प्रशस्ति के अनुसार, पुलकेशिन द्वितीय ने पल्लवों से हुए युद्ध में वेंगी को छीन लिया था जहाँ विष्णुवर्द्धन ने चालुक्य वंश की एक नई शाखा को स्थापित किया।
- पुलकेशिन द्वितीय के पश्चात् विक्रमादित्य प्रथम ने 654-55 ई. में चालुक्य वंश की सत्ता ग्रहण की। इसने चोलों, पांड्यों और चेरों (केरलों) की सत्ता को समाप्त किया। साथ ही, पल्लव शासक को भी अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।
- संभवत: 680 ई. में चालुक्यों की राजगद्दी पर विनयादित्य बैठा जिसने जेजुरी ताम्रपत्र के अनुसार पल्लवों, कलभ्रों, मालवों और चोलों पर विजय प्राप्त की। 'येवूर अभिलेख' में विनयादित्य के युद्धमल्ल विरुद का उल्लेख मिलता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

महाबलीपुरम् की स्थापत्य कला

- पल्लव वंश के अंतर्गत महाबलीपुरम् में विभिन्न कलाकृतियों का विकास हुआ जिन्हें सम्मिलित रूप से 'महाबलीपुरम् के स्मारक समूह' के रूप में जाना जाता है। इसे वर्ष 1984 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

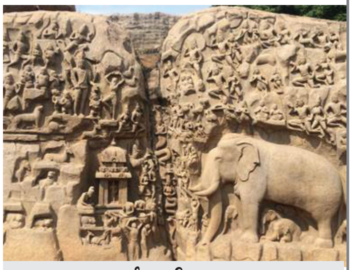
अर्जुन की तपस्या

- महाबलीपुरम् के स्मारक समूह के अंतर्गत निम्नलिखित शामिल हैं–
  - ➤ रथ मंदिरों का निर्माण नरसिंहवर्मन प्रथम के शासनकाल में करवाया गया।
  - ➤ चट्टानों को काटकर शैलकृत गुफाओं को बनाया गया। इनमें वराह गुफा मंदिर, कृष्ण गुफा मंदिर, पंचपांडव गुफा मंदिर और महिषासुरमर्दिनी मंडप प्रमुख हैं।
  - ➤ शोर या समुद्र तट के मंदिर के अंतर्गत कुल तीन (दो छोटा और एक बड़ा) मंदिर हैं।
  - ➤ दो विशालकाय शिलाखंडों पर अर्जुन की तपस्या या भगीरथ की तपस्या को उकेरा गया है। भगीरथ वाले शैलचित्र में गंगा के स्वर्ग से पृथ्वी पर आने की कथा का वर्णन है। इसके निकट एक अन्य चट्टान है जिसे कृष्ण का 'बटर बॉल' कहा जाता है।

महाबलीपुरम् का शोर मंदिर

महाबलीपुरम् का शोर मंदिर

- शोर मंदिर या समुद्र तट के मंदिर का निर्माण राजसिंह शैली में किया गया है।
- इसके अंतर्गत कुल तीन मंदिर हैं जिनमें दो छोटे और एक बड़ा है।
- ये तीनों मंदिर एक ही चबूतरे के ऊपर बने हैं। मुख्य मंदिर का गर्भगृह समुद्र की ओर है तथा प्रवेश पूर्व की ओर से है, अत: सूर्य की किरणें मंदिर में स्थापित मुख्य देवता के ऊपर पड़ती हैं।
- मंदिर की निचली मंज़िल वर्गाकार है, जबकि ऊपरी भाग पिरामिडनुमा है।

गंगा का उद्गम, महाबलीपुरम्

- मुख्य मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। इस मंदिर परिसर में भगवान विष्णु की एक अनंतशयन प्रतिमा भी स्थापित है।

मूर्तिकला (Sculpture)

- पल्लवकालीन मंदिरों में स्थापित मूर्तियों में सजीवता एवं स्वाभाविकता स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होती है। इस काल से ही प्रतिमाओं की भाव-भंगिमा पर विशेष रूप से ध्यान देने की परंपरा विकसित हुई तथा देवी-देवताओं की मूर्तियों को आभूषणों से अलंकृत किया जाने लगा। नृत्य-अभिनय मुद्रा में प्रथम मूर्ति पल्लव काल से ही प्राप्त हुई।
- पल्लवकालीन वास्तुकला की प्रथम शैली, महेंद्र शैली में निर्मित शैव-मंडपों के गर्भगृहों में शिवलिंग तथा वैष्णव-मंडपों के गर्भगृह में विष्णु आदि देवताओं की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इस शैली का विकास 610-640 ई. के दौरान महेंद्रवर्मन प्रथम के समय में हुआ था।
- पल्लव नरेश नरसिंहवर्मन मामल्ल के दौरान विकसित वास्तुकला की मामल्ल शैली (640-674 ई.) में दो प्रकार के मंदिर मंडप एवं रथ महाबलीपुरम् में बनाए गए थे। ये मंडप व रथ उकेरी गई आकृतियों से अत्यधिक अलंकृत एवं सुसज्जित हैं।
- महाबलीपुरम् में पत्थरों को काटकर गुफाओं का निर्माण करवाया गया जिसे मंडप कहा गया। मंडपों में अद्‌भुत मूर्ति शिल्प के दर्शन होते हैं। मंडपों की मुख्य विशेषता स्तंभ है जिन्हें सिंहों के सिर पर स्थित किया गया है। स्तंभों की लाट नालीदार एवं शीर्ष भाग मंगलघट आकृति का है।
- मामल्ल शैली में निर्मित महिषमर्दिनी मंडप मूर्तिसज्जा के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त, मामल्ल शैली में विकसित आदिवराह मंडप में सिंहाधार स्तंभ बनाया गया था। इस गुफा में राजा महेंद्रवर्मन और उनकी दो रानियों की प्रतिमाएँ मिलती हैं। पंचपांडव गुफा में पत्थरों पर दो आकृतियों में गोवर्धन पर्वत को उठाए हुए एवं गाय को दुहते हुए कृष्ण का अंकन किया गया है।
- मामल्ल शैली में बनाए गए रथ मंदिरों का निर्माण शिल्पकारों ने विशाल चट्टानों को ऊपर से नीचे की तरफ काटकर एवं तराशकर किया था। धर्मराज रथ में नरसिंहवर्मन (महामल्ल) की प्रतिमा उत्कीर्ण है।
- पल्लवकालीन मामल्ल शैली में बनाए गए मंदिर की दीवारें उभरी हुई मूर्तियों से अत्यधिक सुशोभित एवं अलंकृत हैं। मामल्ल शैली के अंतर्गत सिंह स्तंभ की परंपरा आगामी वर्षों में दक्षिण भारत की महत्त्वपूर्ण शैली के रूप में प्रसिद्ध हुई।
- राजसिंह अथवा नरसिंहवर्मन द्वितीय के काल में विकसित राजसिंह शैली (674-800 ई.) के दौरान बनाए गए मंदिरों पर गणेश, हाथी तथा स्कंद आदि की मूर्तियों से अलंकृत किया गया था। महाबलीपुरम् का तटीय शिव मंदिर राजसिंह शैली का एक प्रमुख उदाहरण है जहाँ मूर्तिकला के विशिष्ट नमूने देखने को मिलते हैं।

साहित्य (Literature)

- पल्लवकालीन शासकों की राजसभा में उच्च कोटि के विद्वानों को आश्रय प्राप्त था। इन विद्वानों द्वारा संस्कृत और तमिल भाषाओं में

Copyright @ Sanskriti IAS

संस्कृति IAS

जहाँ एक नहीं, हर शिक्षक है श्रेष्ठ

देश में हिंदी माध्यम से
सामान्य अध्ययन की सर्वश्रेष्ठ टीम

सामान्य अध्ययन

फाउंडेशन कोर्स (प्रिलिम्स + मेन्स)

प्रत्येक माह नया बैच आरंभ

हाइब्रिड कोर्स
ऑफलाइन + ऑनलाइन

SPECIAL OFFER
9555 124 124

दिल्ली एवं प्रयागराज

वैकल्पिक विषय

इतिहास वैकल्पिक विषय
द्वारा- श्री अखिल मूर्ति

भूगोल वैकल्पिक विषय
द्वारा- श्री कुमार गौरव

कार्यक्रम विशेषताएँ
- इतिहास और भूगोल में मानचित्र द्वारा अध्ययन के लिए वैज्ञानिक प्रविधि का प्रयोग
- क्लास के तुरंत बाद प्रत्येक विद्यार्थी की विषय संबंधी शंकाओं का निवारण
- प्रत्येक विद्यार्थी की पर्सनल मेंटरिंग व टेस्ट का मूल्यांकन फैकल्टी द्वारा
- मुख्य परीक्षा में पूछे गए विगत 25 वर्षों के प्रश्नों का उत्तर लेखन अभ्यास

GS EXTENSIVE COURSE Prelims + Mains
- लगभग 650 कक्षाओं का एक्स्टेंसिव स्टडी प्रोग्राम
- AI द्वारा समर्थित अध्यापन प्रविधि का प्रयोग
- प्रत्येक टॉपिक का बेसिक से एडवांस लेवल तक कवरेज

INDIVIDUAL MENTORING
- शॉर्ट नोट्स और सिनॉप्सिस बनाने का प्रशिक्षण
- उत्तर लेखन में सुधार के लिए पर्सनल गाइडेंस
- स्टडी इम्प्रूवमेंट के लिए वन-टू-वन सेशन

PGP PRELIMS GUIDANCE Programme
- प्रत्येक टॉपिक के लिए महत्त्वपूर्ण करेंट अफेयर्स सिनॉप्सिस
- विगत 13 वर्षों के PYQs में पैटर्न के अनुरूप संपूर्ण पाठ्यक्रम का रिवीज़न

PCS COURSES
- UPPCS फाउंडेशन कोर्स
- BPSC फाउंडेशन कोर्स
- MPPCS फाउंडेशन कोर्स
- RAS फाउंडेशन कोर्स
- UP-RO/ARO

MMP MAINS MENTORSHIP Programme
- संस्कृति IAS की कोर फैकल्टी द्वारा Daily पर्सनल मेंटरिंग की सुविधा
- चारों प्रश्नपत्रों पर आधारित 70 टेस्ट का Intensive Test Programme

IGP INTERVIEW GUIDANCE Programme
- एक्सपर्ट के साथ वन-टू-वन सेशन
- DAF एनालिसिस एक्सपर्ट के साथ सीधा संवाद
- इंटरव्यू पैनल द्वारा मॉक इंटरव्यू सेशन्स

CSAT COURSE
- गणित और रीज़निंग का बेसिक से एडवांस लेवल तक Step-by-Step अध्यापन
- कॉम्प्रिहेंशन के प्रश्नों को सटीक और त्वरित ढंग से हल करने के लिए डायनमिक मेथडलॉजी

NCERT COURSE
- प्रत्येक विषय की कक्षा 6 से 12 तक की NCERT पर कक्षानुसार लैक्चर
- NCERT पर आधारित प्रिलिम्स और मेन्स के प्रश्नों पर चर्चा

QAD PROGRAMME
- GS के सभी टॉपिक्स के विगत वर्षों के PYQs पर विस्तृत प्रश्नोत्तर चर्चा
- प्रिलिम्स परीक्षा में जटिल प्रश्नों को सुगमता से हल करने में सक्षम बनाना

CURRENT AFFAIRS Programme
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के समसामयिक घटनाक्रमों का विस्तृत कवरेज
- फैकल्टी द्वारा समसामयिक घटनाक्रमों का विषयवार डिस्कशन

Mode of Courses
- Hybrid Course — Offline Classroom & Online Live Stream
- Offline Classroom
- Online Live Stream — 3 साल तक Mobile App पर वीडियो लैक्चर देखने की सुविधा

हेड ऑफिस: 636, भू-तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
प्रयागराज केंद्र: महाराणा प्रताप चौराहा, स्टैनली रोड, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उ.प्र.

sanskritiias.com
Follows us: YouTube